अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रीय जागृति एवं राजनैतिक संगठनों की स्थापना

हम पढ़ेंगे

8.1 भारत में राष्ट्रीय जागृति के कारण
8.2 भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के पूर्व स्थापित संगठन
8.3 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना
8.4 भारत में राष्ट्रवाद का विकास- उदारवाद एवं उग्र राष्ट्रवाद

1857 ई. का स्वतन्त्रता संग्राम संगठित रूप से अंग्रेजी शासन की समाप्ति के लिए प्रथम सशस्त्र संघर्ष था। इसके दमन के पश्चात् कुछ समय के लिए भारतीयों में निराशा एवं शांति छा गयी परन्तु स्वतन्त्रता संग्राम की स्मृति जनमानस में विद्यमान रही।

1858 के पश्चात् भारतीयों में जो चेतना जागृत हुई, वह विशुद्ध रूप से भारतीय थी। भारतीयों ने यह अनुभव किया कि उनके और अंग्रेजी प्रशासन के हितों में भिन्नता है और अंग्रेज अपने स्वार्थों को पूर्ण करने के लिए भारतीयों का शोषण करते हैं। उन्हें यह भी आभास हुआ कि जब तक वे स्वयं नींद से नहीं जागेंगे और स्वतन्त्रता, आत्मसम्मान, अखण्डता तथा भारतीय होने के गर्व की भावना से कार्य नहीं करेंगे, देश गुलाम बना रहेगा। इस प्रकार की भावानाओं ने भारतीयों में राष्ट्रवादी भावनाएँ भर दीं।

8.1 भारत में राष्ट्रीय जागृति के कारण

अंग्रेजों की विजय, विलय और शोषण नीति की प्रतिक्रियास्वरुप ही 1857 में स्वतंत्रता संग्राम प्रारंभ हुआ व भारतीयो में राष्ट्रवादी भावनाओं का तीव्रता से विकास हुआ। भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में निम्नलिखित कारणों का महत्वपूर्ण योगदान था –

1. राजनीतिक कारण – 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पूर्व ही ब्रिटिश शासन के संरक्षण में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सम्पूर्ण भारत को अपने अधिकार में कर लिया था। 1857 की घटनाओं के पश्चात् भारत में कम्पनी का राज्य समाप्त हो गया और भारत सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया। ब्रिटिश संसद ने 1858 का अधिनियम पारित कर प्रशासकीय परिवर्तन किये परन्तु उससे भारतवासियों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। सन् 1858 में ही महारानी विक्टोरिया ने अपने घोषणा-पत्र में देशी रियासतों के शासकों और भारतीय जनता को आश्वासन दिये थे जिनका आशय यह था कि पूर्व की गलतियों को दोहराया नहीं जायेगा तथा भारतीयों के प्रति भेदभाव का व्यवहार नहीं किया जायेगा परन्तु इस घोषणा-पत्र में उल्लेखित आश्वासनों का सरकार ने कभी पालन नहीं किया।

अंग्रेजी सरकार ने साम्राज्य की एकता और सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए सम्पूर्ण देश में एक जैसा प्रशासन स्थापित किया। एक जैसे कानून लागू किए और समान न्याय प्रणाली की स्थापना की गई। अंग्रेजों द्वारा आरम्भ किये गये एकीकृत शासन से भारतवासी एक सूत्र में बंधे तथा उनमें जागरूकता आयी। यद्यपि ये कार्य अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य के लाभ के लिए किए थे परन्तु इससे राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन मिला।

2. धार्मिक एवं सामाजिक पुनर्जागरण – धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन ने राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन सुधार आन्दोलनों के प्रणेता राजनीतिक जागृति के पथ प्रदर्शक बने। इस आन्दोलन ने भारतीयों के ह्रदय में भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न की। सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलन के प्रणेता – राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहन्स, स्वामी विवेकानन्द, श्रीमती ऐनीबीसेन्ट आदि ने भारतीयों में स्वधर्म, स्वदेशी और स्वराज्य की भावना जागृत की।

उन्नीसवीं शताब्दी के आन्दोलन मूलरूप में सामाजिक और धार्मिक थे परन्तु उनमें राष्ट्रीयता की भावनाओं

का समावेश था। स्वामी दयानन्द सरस्वती के 'आर्य समाज', स्वामी विवेकानन्द के 'रामकृष्ण मिशन' के अतिरिक्त ऐसे अनेक आन्दोलन, सम्प्रदाय और व्यक्ति हुये जिन्होंने समाज में चेतना जगायी। मुसलमानों में अलीगढ़ और देवबन्द आन्दोलन, सिक्खों में सिंह सभा और गुरूद्वारा सुधार आन्दोलन तथा थियोसोफिकल सोसायटी ने भारतीय समाज और चिंतन को बदल डाला। इन आन्दोलनों ने देश की नई पीढ़ी को देश के नेतृत्व के लिए तैयार किया।

भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार आन्दोलन

संस्था व स्थापना का वर्ष	संस्थापक
• आत्मीय सभा (1815)	राजा राममोहन राय
• ब्रह्म समाज (1828)	राजा राममोहन राय
• तत्वबोधिनी सभा (1839)	देवेन्द्र नाथ टैगोर
• प्रार्थना समाज (1867)	आत्माराम पांडूरंग
• सत्यशोधक समाज (1873)	ज्योतिबा फुले
• आर्य समाज (1875)	स्वामी दयानन्द सरस्वती
• थियोसोफिकल सोसायटी (1875)	मैडम ब्लावत्सकी एवं कर्नल आल्काट
• रामकृष्ण मिशन (1897)	स्वामी विवेकानन्द

3. पाश्चात्य शिक्षा, संस्कृति और विचारकों का प्रभाव – अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार लार्ड मैकाले ने भारतीय राष्ट्रीयता को जड़ से समाप्त करने के उद्देश्य से किया था। वह भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रचार कर एक ऐसा वर्ग तैयार करना चाहता था जो ब्रिटिश साम्राज्य के हित सम्वर्धन के लिए कार्य करे। परन्तु अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को विदेशी बन्धन से मुक्त होने की प्रेरणा दी। अंग्रेजी शिक्षा का ज्ञान होने के कारण भारतीय पाश्चात्य साहित्य, विचार, दर्शन और शासन प्रणाली से परिचित हुए।

पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीयों को राष्ट्रीयता, स्वतन्त्रता, समानता और लोकतंत्र जैसे आधुनिक विचारों से अवगत कराया।

4. समकालीन यूरोपीय आन्दोलनों का प्रभाव – ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के कारण भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ जिसके फलस्वरूप भारतीयों का पाश्चात्य जगत के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हुआ। इंग्लैण्ड में सुधार आन्दोलन, इटली, जर्मनी, रोमानिया और सर्बिया के स्वतन्त्रता संग्राम आदि आन्दोलनों ने भारतीयों को अपने अधिकारों हेतु संघर्ष के लिए प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा के कारण भारतीय अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने के लिए बेचैन हो उठे थे।

5. यातायात एवं संचार के साधनों का विकास – अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के पश्चात भारत में यातायात के साधन विकसित किये गये। रेल, तार, डाक, सड़क, पुल आदि का निर्माण अंग्रेजी साम्राज्य की सुरक्षा और आर्थिक शोषण की दृष्टि से किया गया था। यातायात के साधनों के विकसित होने से भारतीयों को लाभ हुआ। एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने की सुविधा हो गई जिससे विचारों का आदान-प्रदान आसान हो गया। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से भारतीयों के संगठित होने तथा उन्हें राजनीतिक एकता के सूत्र में बांधने में यातायात एवं संचार के साधनों से बड़ी सहायता मिली।

6. प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रभाव – उन्नीसवीं सदी में प्राचीन भारतीय साहित्य की खोज का कार्य प्रारम्भ हुआ। भारतीय और पश्चिम के विद्वानों के सहयोग से संस्कृत भाषा के अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया गया। मैक्समूलर, विलियम जोन्स, हरप्रसाद शास्त्री, रामकृष्ण गोपाल भंडारकर, राजेन्द्र लाल मिश्र, महादेव गोविन्द रानाडे जैसे विद्वानों ने भारतीय संस्कृति और साहित्य पर अनेक ग्रंथ लिखे। इनकी रचनाओं का व्यापक प्रभाव भारतीयों पर पड़ा। अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता का ज्ञान होने से उनमें आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना अंकुरित हुई।

7. भारतीय साहित्य एवं समाचार-पत्र – राष्ट्रीय जागृति के उदय में साहित्य और समाचार-पत्रों का

विशिष्ट महत्व है। बंकिमचन्द्र चटर्जी, दीनबन्धु मिश्र, भारतेन्दु हरिशचन्द्र, डी.एल. राय, एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि की रचनाओं का राष्ट्रीय जागृति में महान योगदान रहा। बंकिमचन्द्र चटर्जी की रचना 'आनन्दमठ' और उसमे लिखे गये 'वन्देमातरम्' गीत नवयुवकों का प्रेरणा स्त्रोत बना।

'आनदमठ' में ब्रिटिश राज के राजनीतिक और आर्थिक दोषों का खुलासा किया गया था। दीनबंधु मिश्र के 'नील दर्पण' नाटक में नील बागान के मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों और दु:खों को उजागर किया गया था। लक्ष्मीनाथ बेज बरुआ (असमी) और अल्ताफ हुसैन हाजी (उर्दू) इस काल के राष्ट्रवादी लेखक थे।

भारतीय समाचार पत्रों में अंग्रेजी प्रशासन का समीक्षात्मक विवरण समाचार पत्रों के माध्यम से प्रकाशित होने लगा। भारतीय समाचार पत्रों 'संवाद कौमुदी', 'अमृत बाजार पत्रिका', 'बम्बई समाचार', 'केसरी', 'मराठा', 'हिन्दू', 'पैट्रियट', 'स्वदेशी मित्रम', 'आर्य दर्शन', आदि ने राष्ट्रीय चेतना के विकास में सहयोग दिया। प्रेस ने भारतीयता की चेतना को प्रोत्साहन दिया और राजनीतिक शिक्षा प्रदान की।

8. ब्रिटिश सरकार की आर्थिक शोषण की नीति – आर्थिक शोषण असन्तोष को जन्म देता है। अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना और ब्रिटेन में औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप भारतीय उद्योग धन्धों (कुटीर उद्योग) को गहरा धक्का लगा। भारत से निर्यात होने वाले माल पर चुंगी की दर विदेशों में बढ़ा दी गयी और इंग्लैण्ड की निर्मित वस्तुओं के आयात पर चुंगी की छूट देकर उन्हें भारतीय बाजारों में बेचा जाने लगा। भारत का धन निरन्तर निष्कासित होता गया जिससे आर्थिक ढाँचा लड़खड़ा गया। अत: भारतीय आर्थिक दासता के बन्धन से मुक्त होने के लिए संघर्ष करने को तैयार हुए।

9. प्रजातीय भेदभाव की नीति – अंग्रेज भारतीयों के प्रति प्रजातीय भेदभाव (जातीय अहंकार की भावना से ग्रसित होकर अन्य जातियों को निम्न समझना) की नीति अपनाते थे। वे भारतीयों को घृणा और सन्देह की दृष्टि से देखते थे। प्रतिभाशाली शिक्षित भारतीयों को उच्च सरकारी पदों के योग्य नहीं समझा जाता था। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने वाले भारतीयों पर किसी न किसी प्रकार का दोष लगाकर उन्हें नौकरी पाने के अधिकर से वंचित किये जाने की प्रवृत्ति का विकास हुआ। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, अरविन्द घोष जैसे व्यक्ति ब्रिटिश सरकार की पक्षपातपूर्ण नीति के शिकार हुए।

इल्बर्ट बिल

वाइसराय लार्ड रिपन ने जातीय भेदभाव को दूर करने के लिए एक कानून बनाने का प्रयास किया। इसे विधि सदस्य इल्बर्ट ने तैयार किया था। अत: इसे इल्बर्ट बिल कहा जाता है। इसके द्वारा भारतीय मजिस्ट्रेट और सेशन जज को भी फौजदारी मुकदमों में यूरोपीय लोगों की सुनवाई का अधिकार दिया जाना था।

भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय अपराधियों का मुकदमा सुनने का अधिकार नहीं था इस भेदभाव को दूर करने के लिए इल्बर्ट बिल लाया गया। भारत में बसने वाले यूरोपियनों ने इलबर्ट बिल का संगठित होकर विरोध किया, और इसे काला कानून माना। अंतत: ब्रिटिश सरकार को इल्बर्ट बिल वापस लेना पड़ा। भारतीयों के मन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। इल्बर्ट बिल का अंग्रेजों द्वारा विरोध प्रजातीय भेदभाव की नीति को उजागर करता था।

वाइसराय लार्ड लिटन की प्रतिक्रियावादी नीति प्रजातीय भेदभाव से परिपूर्ण थी। लार्ड लिटन की प्रतिक्रियावादी नीति अर्थात् भारत विरोधी नीति चार वर्ष तक (1876–1880) चली। इस काल में उसने आयातित ब्रिटिश कपड़े पर से शुल्क हटाये, देश में भयंकर अकाल में पीड़ितों को राहत देने के स्थान पर इंग्लैण्ड की महारानी के सम्मान में दरबार आयोजित किया, भारतीयों के हथियार रखने पर लाइसेंस फीस लगा दी गयी,

वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट द्वारा भारतीय भाषाओं के समाचार-पत्रों का दमन करने का प्रयास किया।

इस प्रकार भारत में राष्ट्रीय जागरण और विकास के लिए प्रेरणा सर्वप्रथम धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन ने दी। देशभक्ति तथा स्वाभिमान का बीज इन्हीं आन्दोलनों ने बोया। आर्थिक, राजनीतिक व अन्य कारणों ने इसे और अधिक बढ़ा दिया।

8.2 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पूर्व में स्थापित राजनीतिक संगठन

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में शांतिपूर्ण राजनीतिक गतिविधियाँ आरम्भ हुई। शिक्षित भारतीय, भारत की राजनीतिक व आर्थिक दासता से अनभिज्ञ न थे, इसी वर्ग ने संगठित राजनीतिक गतिविधियों को आरम्भ किया। इसका उद्देश्य भारत में प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना, विचार, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और आर्थिक शोषण की समाप्ति के लिए प्रयास करना था। ये गतिविधियाँ स्वतन्त्रता की माँग में परिवर्तित हो गई। यह राजनीतिक गतिविधियाँ बंगाल, बम्बई, मद्रास में आरम्भ हुई जहाँ अंग्रेजों ने सर्वप्रथम अपना प्रभाव स्थापित किया था।

1857 ई. के पश्चात् राजनीतिक चेतना के स्वर तीव्र हुए एवं जो राजनीतिक संगठन स्थापित हुए, उनमें प्रमुख उल्लेखनीय है - पूना सार्वजनिक सभा (1870), 'इंडियन लीग' (1875), 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' (1876), 'मद्रास महाजन सभा' (1884) तथा 'बम्बई प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन' (1885)। इन संगठनों ने स्थानीय माँगों के साथ-साथ राष्ट्रीय माँगों की जोरदार वकालत की। इस समय तक ऐसी किसी संस्था की स्थापना नहीं हुई थी, जो अखिल भारतीय स्तर पर गठित हो। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए 1883 ई. में 'इंडियन एसोसिएशन' का राष्ट्रीय सम्मेलन सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने कलकत्ता में बुलाया, जिसमें लगभग 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसका दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन दिसम्बर 1885 में पुनः क्लकत्ता में हुआ। भारतीय राष्ट्रीय संगठन की दिशा में यह महत्वपूर्ण कदम था। उपरोक्त सभी संगठनों का उद्देश्य जनता को एक मंच प्रदान करना था, जिसमें जनहित की सामूहिक समस्याओं का समाधान खोजा जा सके। यद्यपि ब्रिटिश प्रशासन ने भारतीय राजनीतिक संगठनों द्वारा प्रस्तुत की गई माँगों की उपेक्षा की परन्तु राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने भारतीयों की माँगों को जोरदार तरीके से उठाया।

ईस्ट इंडिया एसोसिएशन के प्रमुख सदस्य आनंद मोहन बोस और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे। 1885 तक इसकी 60 शाखाएँ स्थापित हो चुकी थी।

8.3 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

सन् 1870 से 1880 तक भारतीय जनता राजनीतिक रूप से जागरूक हो चुकी थी और 1885 ई. तक एक अखिल भारतीय राजनीतिक संगठन की स्थापना का मंच तैयार हो चुका था। इस अखिल भारतीय संस्था को निश्चित स्वरूप प्रदान करने का श्रेय एक सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारी ए.ओ. ह्यूम को दिया जाता है। ह्यूम उदारवादी व्यक्ति थे। ह्यूम ऐसे राजनीतिक संगठन की आवश्यकता अनुभव कर रहे थे जो शासक व शासित वर्ग के बीच की खाई को भर सके। ह्यूम जनता को हिंसा और विद्रोह के मार्ग के स्थान पर वैधानिक राजनीति के मार्ग पर ले जाना चाहते थे। ह्यूम के प्रयत्नों से 'इंडियन नेशनल यूनियन' नामक संस्था का जन्म हुआ।

ह्यूम ने वाइसराय लार्ड डफरिन से सहमति प्राप्त करने के पश्चात यह तय किया कि 25 से 31 दिसम्बर 1885 के मध्य पूना में इण्डियन नेशनल यूनियन की बैठक हो। इस सम्मेलन का उद्देश्य राष्ट्रीय प्रगति के लिए कार्य करने वाले सभी लोगों में आपसी परिचय करना एवं राजनीतिक कार्यक्रम निश्चित करना था।

'इंडियन नेशनल यूनियन' का सम्मेलन पूना में होना तय था परन्तु अन्तिम क्षणों में यह स्थान परिवर्तित कर मुम्बई किया गया। सम्मेलन 28 दिसम्बर 1885 ई. को गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालेज मुम्बई में सम्मेलन हुआ ह्यूम के सुझाव पर इसका नाम 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' किया गया इस प्रकार 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' का जन्म हुआ। कांग्रेस के स्थापना सम्मेलन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कांग्रेस के इस प्रथम सम्मेलन के

अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी बने।

कांग्रेस की स्थापना के उद्देश्य

इतिहासकारों का कहना है कि ह्यूम और उसके साथियों ने अंग्रेजी सरकार के इशारे पर ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा कवच के रूप में कांग्रेस की स्थापना की। ह्यूम नहीं चाहते थे कि सरकार के असन्तोष से नाराज जनता हिंसा का मार्ग अपनाएँ अत: वे जनता को हिंसा के मार्ग की अपेक्षा वैधानिक मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित करना चाहते थे। संवैधानिक मार्ग से आशय है - प्रार्थना-पत्रों, स्मृत्ति-पत्रों और प्रतिनिधि मण्डलों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार को प्रभावित कर अपनी माँगे पूर्ण करवाना।

कांग्रेस के नेताओं ने कांग्रेस की स्थापना में ए.ओ. ह्यूम का नेतृत्व स्वीकार किया क्योंकि वे तत्कालीन परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार के साथ खुला संघर्ष करने की स्थिति में नहीं थे। वे ब्रिटिश संरक्षण में कांग्रेस की स्थापना के विचार को लाभदायक मानते थे और ह्यूम के विचारों से पूर्णत: सहमत थे। व्यावहारिकता इसी में थी कि वे एक मंच तैयार करने में ह्यूम को सहयोग प्रदान करें जहाँ देश की समस्याओं पर विचार-विमर्श हो सके।

कांग्रेस की स्थापना के लिए उस समय की राष्ट्रव्यापी हलचलें, देशभक्ति की भावना, विभिन्न वर्गों में व्याप्त बैचेनी, ब्रिटेन की उदारवादी पार्टी से भारतीयों को निराशा एवं विभिन्न राजनीतिक संगठनों द्वारा एक केन्द्र व्यापी संगठन की आवश्यकता महत्वपूर्ण कारण थे। इसीलिए कुछ विद्वान इसे राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति मानते हैं।

कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष व्योमेशचन्द्र बनर्जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन (1885) में निम्नलिखित उद्देश्य बताए -

1. साम्राज्य के विभिन्न भागों में देश के हित के कार्यों में संलग्न ऐसे सभी व्यक्तियों में परस्पर घनिष्ठता और मित्रता को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य करना जो अत्यधिक उत्साही हैं।
2. अपने सभी देश-प्रेमियों में जाति, धर्म या प्रान्तीयता के सभी सम्भव पूर्वाग्रहों को सीधे मित्रतापूर्ण व्यक्तिगत संपर्क से दूर करना और राष्ट्रीय एकता की उन भावनाओं को पूरी तरह विकसित और संगठित करना, जिनका जन्म लार्ड रिपन के शासन काल के दौरान हुआ था।
3. तत्कालीन महत्वपूर्ण और ज्वलन्त सामाजिक समस्याओं के बारे में शिक्षित वर्ग के परिपक्व व्यक्तियों के साथ पूरी तरह से विचार-विमर्श करने के बाद बहुत सावधानी से इनका प्रमाणित लेखा-जोखा तैयार करना।
4. जिन दिशाओं में और जिस तारीख से अगले बारह महीनों में देश के राजनीतिज्ञों को लोकहित के लिए कार्य करना चाहिए उनका निर्धारण करना।

यह संगठन शीघ्र ही राष्ट्रव्यापी हो गया और भारतीय भावनाओं की अभिव्यक्ति करने लगा।

8.4 भारत में राष्ट्रवाद का विकास उदारवाद एवं उग्र राष्ट्रवाद

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् इसके प्रथम अधिवेशन में सभी जातियों, सम्प्रदायों और वर्गों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। लोकमान्य तिलक के कांग्रेस में आगमन पर यह संस्था जनसाधारण के निकट आयी और महात्मा गांधी के काल में इसका राष्ट्रव्यापी स्वरूप बना।

भारत में राष्ट्रवाद का विकास विभिन्न चरणों में हुआ। समय के साथ-साथ कांग्रेस की रीति-नीति में भी परिवर्तन हुआ। कांग्रेस की विचारधारा से भिन्न विचारधाराएँ भी इसमें पल्लवित एवं पुष्पित हुयीं। प्रारम्भिक वर्षों

में कांग्रेस का स्वरूप क्या था, इस अध्याय में इसे समझने का प्रयास किया गया है।

उदारवाद या उदार राष्ट्रवादी विचारधारा

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में सन् 1885 से 1905 का समय उदारवादी युग के नाम से जाना जाता है। इस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर उदारवादी नेताओं के हाथों में थी। इन नेताओं में प्रमुख दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले, रास बिहारी बोस, महादेव गोविन्द रानाडे थे। ये नेता उदारवादी राजनीति में विश्वास रखते थे तथा प्रत्येक उद्देश्य को क्रमिक व संवैधानिक तरीकों से प्राप्त करना चाहते थे।

उदारवादी संवैधानिक तरीकों में विश्वास के साथ प्रार्थना-पत्रों, स्मृत्ति-पत्रों और प्रतिनिधि मण्डलों द्वारा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते थे। उदारवादियों ने इंग्लैण्ड की जनता एवं राजनीतिज्ञों को प्रभावित करने के लिए अपना प्रतिनिधि मण्डल भी वहाँ भेजा था। इंग्लैण्ड की जनता को भारतीय समस्याओं से अवगत कराने के लिए उदारवादियों ने लंदन से 'इण्डिया' नामक एक समाचार-पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। उदारवादी प्रतिवर्ष अपनी माँगों के समर्थन में प्रस्ताव पारित करते थे और तर्क द्वारा अपनी माँगों के औचित्य को समझाने का प्रयास करते थे। उनके कार्यक्रम में जन आन्दोलनों के लिए कोई स्थान न था। उन्हें भय था कि आन्दोलन के कारण अराजकता फैल जाएगी।

प्रारम्भ में ब्रिटिश सरकार का रुख कांग्रेस के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रहा। शासकीय कर्मचारी भी कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेते थे, परन्तु धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस को अल्पसंख्यक का प्रतिनिधित्व करने वाली तथा ब्रिटिश हितों की विरोधी तक घोषित कर दिया।

कांग्रेस का एक वर्ग उदारवादियों की नीति को पसन्द नहीं करता था। उनका मानना था उदारवादी राजनीतिक भिक्षावृत्ति की नीति अपना रहे है। धीरे-धीरे उदारवादियों का भ्रम भी ब्रिटिश शासन से टूटने लगा, क्योंकि ब्रिटिश सरकार उनके प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दे रही थी।

कांग्रेस के प्रारम्भिक काल में स्वतन्त्रता की मांग नहीं की गई केवल भारतीयों के लिए कुछ रियायतें ही मांगी गई। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशक में तिलक ने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया।

उदारवादियों की उपलब्धियाँ एवं महत्व

उदारवादी प्रार्थनाओं एवं स्मृत्ति-पत्रों के माध्यम से अपनी मांग मनवाने में सफल नहीं हुए, किन्तु उदारवादियों को यह श्रेय दिया जाता है कि उन्होंने कांग्रेस के शैशव काल में राष्ट्रीय संघर्ष के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण किया। उन्होंने भारतीयों को देश की समस्याओं पर विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराया और उन्हें राजनीतिक रूप से शिक्षित किया।

यद्यपि उदारवादी ब्रिटिश शासन को कल्याणकारी मानते थे परन्तु उन्होंने ब्रिटिश

उदारवादी कांग्रेस की माँगे

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों एवं अन्य अवसरों पर उदारवादियों ने जो माँगे प्रस्तुत की, उनमें प्रमुख थीं -

- प्रान्तीय तथा केन्द्रीय विधान सभाओं में निर्वाचित सदस्यों की संख्या में वृद्धि की जाए।
- प्रशासनिक सेवाओं का भारतीयकरण किया जाए।
- सेना के खर्चों में कमी की जाए।
- ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा का भार भारत पर न डाला जाए।
- कुटीर उद्योगों तथा तकनीकी शिक्षा का विस्तार किया जाए।
- उच्च पदों पर भारतीयों की नियुक्ति की जाए।
- किसानों पर से कर के बोझ कम किए जाएँ।

शासन की त्रुटियों को उजागर करने में कोई कसर नहीं रखी। दादा भाई नौरोजी ने भारत से धन निष्कासन और उसके कारण उत्पन्न कुप्रभावों से लोगों को परिचित कराया। उदारवादियों के प्रभाव के कारण ही ब्रिटिश सरकार ने 1892 का अधिनियम पारित कर भारतीयों को परिषदों से सम्मिलित होने का मार्ग खोला।

उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जन्म के प्रथम 20 वर्षों (1885-1905 ई.) तक कांग्रेस का नेतृत्व उदारवादियों के हाथ में रहा। उग्र राष्ट्रवादी उदारवादियों की याचनाओं और मिन्नतों की राजनीति से ऊब गये थे और भारतीय जनमानस में आत्म सम्मान, आत्म विश्वास, देशभक्ति और साहस की भावना का संचार कर राष्ट्रीय संघर्ष को एक नयी दिशा और नयी गति देना चाहते थे। उग्र राष्ट्रवादी ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को राजनीतिक अधिकार देने के लिए विवश करना चाहते थे।

उग्र राष्ट्रवाद के उदय के कारण

20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में उग्र राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे -

1. **उदारवादियों की कार्यपद्धति के प्रति असन्तोष** - उग्र राष्ट्रवादी नेताओं, लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द घोष एवं अन्य, ने अनुभव किया कि प्रार्थना-पत्रों, स्मृत्ति-पत्रों, ज्ञापन आदि देकर अपनी बात मनवाने के तरीके से भारतीयों को राजनीतिक अधिकर प्राप्त होने वाले नहीं हैं। अंग्रेजों की न्यायप्रियता एवं तथाकथित सदाशयता में उग्र राष्ट्रवादियों का विश्वास नहीं था। वे अंग्रेजों के विरुद्ध सशक्त एवं प्रबल जन-आन्दोलन आरम्भ करना चाहते थे लोकमान्य तिलक ने कहा था ''स्वतन्त्रता, भारतीयों को चांदी की थाली में रखी हुयी नहीं मिल जायेगी।''

2. **सवैधानिक आन्दोलनों की विफलता** - ब्रिटिश सरकार ने उदारवादियों की अनेक प्रार्थनाओं और याचिकाओं के पश्चात् 1892 का भारतीय परिषद अधिनियम स्वीकार किया था, परन्तु इससे भारतीयों को कोई वास्तविक अधिकार प्राप्त नहीं हुए। वैधानिक उपायों द्वारा राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने की समस्त आशाएँ धूमिल हो गयीं।

3. **ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रियावादी नीति** - ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रियावादी नीति उग्र राष्ट्रवाद के विकास का प्रमुख कारण बनी। 1858 के भारत शासन अधिनियम और महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा द्वारा भारतीयों को जो आश्वासन दिये गये थे, उनमें शाब्दिक आडम्बर अधिक था। इन आश्वासनों का सही अर्थों में पालन नहीं किया गया। ब्रिटिश सरकार की शोषण, दमन और भेदभाव की नीति पूर्ववत जारी रही। इंग्लैण्ड में अनुदार दल के शासन काल में भारत का शासन भी प्रतिक्रियावादी वाइसरायों के हाथ में रहा।

भारतीयों के प्रति ब्रिटिश शासन का दृष्टिकोण अत्यधिक अमानवीय और प्रजातीय भेदभाव से पूर्ण था। लार्ड लिटन और लार्ड कर्जन ने भारतीयों की जातीय भावना को ठेस पहुँचायी।

4. **ब्रिटिश सरकार की आर्थिक नीति** - ब्रिटिश सरकार की आर्थिक शोषण की नीति के कारण भारतीय कृषि और उद्योग-धन्धों को अपार क्षति पहुँची। ब्रिटिश आर्थिक नीति पूंजीपतियों के हित संरक्षण की थी। इंग्लैण्ड में निर्मित वस्तुओं पर से आयात कर समाप्त कर दिया गया। इससे भारतीय कुटीर उद्योगों को बड़ा नुकसान हुआ।

5. **19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन** - 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलनों ने भारतीय जनमानस को अन्याय के विरुद्ध सतत् संघर्ष करने के लिए तैयार किया। इन आन्दोलनों के फलस्वरूप लोगों में स्वाभिमान, त्याग और आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ। स्वामी दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज ने समाज में व्याप्त निष्क्रियता, हीनता और उदासीनता की प्रवृत्ति पर कठोर प्रहार कर अपने अनुयायियों को राजनीतिक रूप से जागृत किया।

बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिनचन्द्र पाल, अरविन्द घोष ऐनीबीसेन्ट जैसे राष्ट्रवादियों ने सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों से प्रेरित होकर राष्ट्रीय संघर्ष को दिशा दी।

6. प्राकृतिक प्रकोप (दुर्भिक्ष एवं प्लेग) – 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीयों को अनेक प्राकृतिक विपदाओं का सामना करना पड़ा। अकाल के समय भारत की ब्रिटिश सरकार दिल्ली दरबार के शानदार आयोजन में व्यस्त थी। 1896 में बम्बई में प्लेग की महामारी फैली। दुर्भिक्ष और प्लेग जैसी प्राकृतिक विपदाओं और उसके प्रति ब्रिटिश सरकार के उपेक्षापूर्ण रूख ने उग्र राष्ट्रवाद की भावनाओं में वृद्धि की।

7. पाश्चात्य विचारों एवं विदेशी आन्दोलनों का प्रभाव – अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होने के कारण अनेक शिक्षित भारतीय पाश्चात्य क्रान्तिकारी विचारों से परिचित हुए। रूसो, वाल्टेयर, मैजिनी, बर्क और गैरीवाल्डी के विचारों ने उन्हें अत्यधिक प्रभावित किया। 1896 में एबीसीनिया की इटली पर विजय, 1905 में जापान जैसे छोटे से देश द्वारा रूस पर विजय ने भारतीयों के मन में उत्साह का संचार किया।

8. बंगाल का विभाजन और क्रान्तिकारी राष्ट्रीयता का विकास – लार्ड कर्जन ने 1905 में 'फूट डालो और शासन करो' की नीति का अनुसरण करते हुए बंगाल को दो भागों में विभाजित कर दिया। उसने बंगाल की जनता की एकता को आघात पहुँचाने और वहाँ के हिन्दुओं और मुसलमानों में सदैव के लिए फूट डालने के उद्देश्य से विभाजन का कुटिल षडयन्त्र रचा था। उससे बंगाल में विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो गयी। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने लिखा है, ''बंगाल विभाजन के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया।'' महात्मा गांधी ने 'हिन्द स्वराज्य' में स्वीकार किया है कि बंगाल विभाजन के बाद ही भारत में वास्तविक जागृति हुई।

उग्र राष्ट्रवादी आन्दोलन का विकास व कार्यपद्धति

राष्ट्रीय आन्दोलन का उग्र स्वरूप सर्वप्रथम महाराष्ट्र में परिलक्षित हुआ। 1893 ई. में बालगंगाधर तिलक ने महाराष्ट्र में गणपति उत्सव को सार्वजनिक रूप प्रदान किया। 1899 में उन्होंने शिवाजी उत्सव मनाना प्रारम्भ किया। इन उत्सवों का उद्देश्य जनता में राष्ट्रीय भावना का विकास करना था। 1896-97 में अकाल तथा महामारी के कारण महाराष्ट्र में घोर असन्तोष फैला।

पंजाब में लाला लाजपतराय ने उग्र राष्ट्रवादी आन्दोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने 'कायस्थ समाचार' के माध्यम से जनता को संघर्ष के लिए प्रेरित किया। बंगाल में उग्र राष्ट्रवाद का जन्म बंगाल विभाजन से हुआ। बंगाल विभाजन के विरोध में सारे देश में सार्वजनिक सभाएँ की गयी और जुलूस निकाले गये। विपिनचन्द्र पाल ने मद्रास का दौरा किया और जनता में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध चेतना उत्पन्न की। भारतीय पत्र-पत्रिकाओं ने भी उग्र राष्ट्रवाद आन्दोलन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उग्र राष्ट्रवादियों की कार्यपद्धति उदारवादियों से भिन्न थी। उग्र राष्ट्रवादी त्याग और बलिदान के बल पर 'स्वशासन' प्राप्त करना चाहते थे। बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा उनके तीन प्रमुख अस्त्र थे, जिनका प्रयोग उन्होंने ब्रिटिश बन्धन से मुक्त होने के लिए किया।

इन नेताओं ने 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग एक भिन्न अर्थ में किया। उनके लिए 'स्वशासन' का अर्थ सिर्फ राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति से नहीं था, वरन् एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना से था, जिसमें जनता का विकास हो सके।

उग्र राष्ट्रवादी बहिष्कार और स्वदेशी की नीति के प्रबल समर्थक थे। 'बहिष्कार' का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से नहीं था अपितु इसका व्यापक अर्थ था सरकारी सेवाओं, प्रतिष्ठानों तथा उपाधियों का बहिष्कार।

'स्वदेशी' शब्द 'बहिष्कार' का पूरक था। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में यह विचार उत्पन्न हुआ कि

देश से धन निष्कासन एवं दरिद्रता में वृद्धि को रोकने के लिए देश में निर्मित वस्तुओं (स्वदेशी) का अधिकाधिक उपयोग आवश्यक है। 'स्वदेशी' का उपयोग देशभक्ति का प्रतीक बन गया।

उग्र राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा चलाये जा रहे बहिष्कार और स्वदेशी आन्दोलनों को बड़ी सफलता मिली। भारतीय घरेलू उद्योगों के लिए यह वरदान सिद्ध हुआ। कुटीर उद्योगों के विकास के लिए एक राष्ट्रीय कोष का निर्माण किया गया। शीघ्र ही स्कूल एवं कॉलेज इस आन्दोलन के प्रमुख केन्द्र बन गये।

अंग्रेजी शिक्षा भारतीयों के बौद्धिक विकास को अवरुद्ध करती थी। राष्ट्रवादियों ने राष्ट्रीय शिक्षा के कार्यक्रम के माध्यम से भारतीयों के बौद्धिक विकास के लिए प्रयास किए। इसका प्रमुख उद्देश्य था – विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देना जो देश के हितों के अनुकूल हो। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' की स्थापना की गयी।

उग्रराष्ट्रवादी आन्दोलन का महत्व

उग्र राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग की अपेक्षा निष्क्रिय प्रतिरोध की नीति अपनायी, जो आन्दोलन केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित था। उसे उन्होंने जन आन्दोलन में बदल दिया। उग्र राष्ट्रवादियों के राष्ट्रीय आन्दोलन का सबसे बड़ा महत्व यह है कि इस आन्दोलन के प्रणेताओं ने हिंसा के मार्ग को कभी नहीं अपनाया तथा आन्दोलन को प्रभावशाली बनाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम पर विशेष जोर दिया।

उन्होंने बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा जैसे रचनात्मक कार्य आरम्भ किए तथा स्वाभिमान, स्वावलम्बन और आत्मनिर्भरता जैसे आन्तरिक गुणों के विकास पर बल दिया।

उग्र राष्ट्रवादी आन्दोलन के प्रमुख नेता

भारतीय जनमानस में बढ़ते हुए असंतोष और सरकार की अकर्मण्यता को उजागर कर राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नयी दिशा देने का कार्य लाल, बाल, पाल ने किया। लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, और विपिनचन्द्र पाल ने भारतीय जनमानस में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, देशभक्ति और साहस की भावना का संचार किया।

लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल

तिलक उग्र राष्ट्रवादिता के जनक थे। उनके राजनीतिक विचारों पर उनकी धार्मिक भावनाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। प्राकृतिक अधिकार, राजनीतिक स्वतन्त्रता एवं न्याय के सिद्धान्तों पर उनका अटूट विश्वास था। उन्होंने घोषित किया **''स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और उसे मैं लेकर रहूँगा''** तिलक आजीवन स्वतन्त्रता और स्वराज्य के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होंने युवकों को आत्मोत्सर्ग तथा निडर होकर संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

राष्ट्रीयता की उग्र राष्ट्रवादी विचारधारा के अग्रदूत विपिनचन्द्र पाल ओजस्वी वक्ता, कुशल पत्रकार एवं शिक्षाशास्त्री थे। 'न्यू इण्डिया' और 'वन्देमातरम्' पत्रों के माध्यम से उन्होंने अपने विचार प्रकट किये। बंगाल

विभाजन की घटना ने उन्हें उग्र राष्ट्रवादी विचाराधारा की तरफ मोड़ा। बंगाल में अभूतपूर्व राष्ट्रीय चेतना के विकास में विपिनचन्द्र पाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

लाला लाजपतराय कांग्रेस की उदारवादी विचारधारा एवं कार्यपद्धति के विरोधी थे। बंगाल विभाजन का उन्होंने घोर विरोध किया। इसलिए देश के लिए स्वराज्य परम आवश्यक है और सुधार अथवा उत्तम राज्य इसके विकल्प नहीं हो सकते।

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए -

1. कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष थे -
   (i) दादाभाई नौरोजी (iii) अरविन्द घोष
   (iii) गोपालकृष्ण गोखले (iv) व्योमेशचन्द्र बनर्जी
2. अंग्रेजी शिक्षा को भारत में मुख्यतः लागू किया -
   (i) रामकृष्ण गोपाल (ii) मैक्समूलर
   (iii) मैकाले (iv) भारतेन्दु हरीशचन्द्र
3. लाला लाजपतराय ने कौन से समाचार पत्र के माध्यम से जनता को संघर्ष के लिए प्रेरित किया-
   (i) केसरी (ii) संवाद कौमुदी
   (iii) हिन्दुस्तान (iv) कायस्थ समाचार
4. निम्नलिखित में से कौन उदारवादी विचारों का नहीं था -
   (i) दादाभाई नौरोजी (ii) अरविन्द घोष
   (iii) गोपालकृष्ण गोखले (iv) फिरोजशाह मेहता
5. 'स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा' यह कथन किससे सम्बन्धित है-
   (i) विपिनचन्द्र पाल (ii) लाला लाजपत राय
   (iii) अरविन्द घोष (iv) बाल गंगाधर तिलक

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. वाइसराय ..... की प्रतिक्रियावादी नीति प्रजातीय भेदभाव से परिपूर्ण थी।
2. कांग्रेस के संस्थापक ..... को माना जाता है।
3. 'वन्देमातरम्' गीत की रचना ..... ने की।
4. 1883 में इंडियन एसोसिएशन का राष्ट्रीय सम्मेलन ..... में बुलाया गया।

सही जोड़ी मिलान कीजिए -

1.	राजा राममोहन राय	-	आर्य समाज
2.	ज्योतिबा फूले	-	रामकृष्ण मिशन
3.	स्वामी दयानन्द सरस्वती	-	सत्यशोधक समाज
4.	स्वामी विवेकानन्द	-	तत्व बोधिनी सभा
5.	देवेन्द्रनाथ टैगौर	-	ब्रह्म समाज

अति लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. कांग्रेस ने अपने आरिम्भक काल में दुखों तथा शिकायतों के निराकरण के लिए कौन से तरीके अपनाए।
2. उग्र राष्ट्रवाद विचारधारा के प्रमुख नेताओं के नाम बताइये।
3. बहिष्कार का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. लार्ड कर्जन ने शासन की कौन सी नीति अपनाई।
5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ह्यूम ने किन उद्देश्यों को लेकर की थी?
6. कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में कितने प्रतिनिधियों ने भाग लिया?

लघुउत्तरीय प्रश्न –

1. भारत में राष्ट्रीय जागृति के विकास में पश्चिम के विचारों और शिक्षा ने क्या भूमिका निभाई।
2. राष्ट्रीय जागृति के विकास में किन भारतीय समाचार–पत्रों ने अपनी भूमिका निभाई थी? लिखिए।
3. अंग्रेजों के आर्थिक शोषण की नीति ने भारतीय कुटीर उद्योग को कैसे प्रभावित किया?
4. भारत में बसने वाले यूरोपीयों ने इलबर्ट बिल का विरोध क्यों किया?
5. कांग्रेस की स्थापना के क्या उद्देश्य थे? लिखिए।
6. उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में किन कारणों से उग्र राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन मिला।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. भारतीय राष्ट्रीय जागृति में धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के लिए उत्तरदायी कारणों का विवरण दीजिए।
3. उदारवादी दल की कार्यविधि उग्र राष्ट्रवादी दल की कार्यविधि से किस प्रकार भिन्न थी? स्पष्ट कीजिए।
4. टिप्पणी लिखिए –
   क. बालगंगाधर तिलक
   ख. विपिनचन्द्र पाल
   ग. लाला लाजपत राय